International Journal of Jyotish Research: 2019; 4(2): 25-29

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2019; 4(2): 25-29
© 2019 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 16-05-2019
Accepted: 20-06-2019

किरन भीम
ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
किरन भीम
ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ज्योतिष शास्त्र में आयु विचार

किरन भीम

परिचय

लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, ज्योतिर्विज्ञान विभाग की शोध छात्रा किरन भीम (NET- JRF) द्वारा प्रस्तुत किया गया शोध कार्य जिनका विषय "बृहत्पाराशर होरा शास्त्र एवं जैमिनी पध्दति का तुलनात्मक अध्ययन" है। "ज्योतिष शास्त्र में आयु विचार" का अपना शोध पत्रिका प्रस्तुत किया है।

शोध पत्रिका

मनुष्य अपने जीवन में अपनी आयु के सन्दर्भ में ज्ञात करने के लिए उत्सुक रहता है। दैवज्ञ का कर्तव्य है कि वह जातक को उसकी आयु के कठिन समय के विषय में सावधान करके उस स्थिति के उपायों का निर्धारण करके उसे भविष्य की कठिनाइयों के प्रति सजग करे।

मययवनमणित्थशक्तिपूर्वैर्दिवसकरादिषु वत्सराः प्रदिष्टा।
नवतिथि विषयाश्चिभूतरूद्रा दशसहिता दशाभिःस्वतुङ्गभेषु।। [1]

मय नामक महान असुर लङ्काधीश रावण की धर्मपत्नी मन्दोदरी का पिता अर्थात् रावण का श्वसुर था और बड़े तप से जिसने सूर्यदेव की आराधना से अशेष ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया है। आचार्य वराह ने अपने अन्य आचार्यों के साथ इस ग्रन्थ में आयु के विचार में इन्हीं मयासुर का सर्वप्रथम उल्लेख किया है।

ज्योतिष द्वारा भविष्य निर्णय के पूर्व ही जातक की आयु निर्धारण अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि यदि आयु नहीं तो भविष्य निर्णय का क्या प्रयोजन है ? इस सम्बन्ध में सामुद्रिकशास्त्र में निम्न श्लोक द्वारा उल्लेख मिलता है-

पूर्वमायुः परीक्षैत पश्चाल्लक्षणमुच्यते।
आयुर्विना नराणां तु लक्षणै किं प्रयोजनम्।।[2]

[1] बृहज्जातकम् पुष्ताग्रा

[2] सामुद्रिकशास्त्र

परन्तु आयु निर्धारण एक कठिन विषय है। इस विषय में महर्षि पराशर कहते हैं-

साधु पृष्टं त्वया विप्र ! नराणां हितकाम्यया ।
आयुर्ज्ञानं प्रवक्ष्यामि दुर्लभं यत् सुरैरपि।।[3]

अर्थात् महर्षि पराशर कहते हैं कि हे विप्र ! मनुष्यों के हित की कामना से तुमने बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है, अब मैं आयुष्य ज्ञान को कहता हूँ जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है। तत्पश्चात् उन्होंने अपने होराशास्त्र में अनेक गणितीय प्रक्रियाओं, ग्रहों के बलाबल आदि के द्वारा आयु निर्धारण का वर्णन किया है। आयु निर्धारण के लिए अनेक पध्दतियाँ ज्योतिष शास्त्र में प्रचलित हैं किन्तु ये पध्दतियाँ व्यवहार में कम आती हैं। पराशर ज्योतिष में आयु निर्धारण विधि गणितीय प्रक्रिया से होती है। दक्षिण भारत के प्रसिध्द विद्वान ज्योतिषी महर्षि जैमिनि के द्वारा आयु विचार का सिध्दान्त विशिष्ट स्थान रखता है। जिसमें आयु विचार स्टीक ढंग से किया गया है। इस शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि जैमिनि के द्वारा प्रतिपादित सिध्दान्त आज के परिपेक्ष्य में भी सही ढंग से आयु निर्धारण करने में सक्षम होता है। ज्योतिर्विज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्वान जनो को ज्ञात ही होता है कि आयु निर्धारण की अनेक पध्दतियाँ है। जैसे कि पराशर ज्योतिष के आयु निर्धारण का अपना अलग सिध्दान्त होता है। परन्तु जैमिनि का आयु विचार और पराशर ज्योतिष का आयु विचार में तुलना की जाय तो प्राय: देखा की दोनो के परिणामों में समानता मिलती है। पराशर ज्योतिष में आयु निर्धारण विधि गणितीय प्रक्रिया से और कुण्डली में ग्रह स्थिति के अनुसार होती है। परन्तु पराशर ज्योतिष में भिन्न भिन्न ग्रन्थों में अलग होने के कारण मतभेद भी हैं।

आयु निर्धारण तीन वर्गों में रखा जाता है जो निम्न प्रकार से है-

- दीर्घ आयु
- मध्यम आयु
- अल्प आयु

जैमिनि सूत्रम् के अनुसार, आयु निर्धारण के लिए निम्न सूत्रों का वर्णन मिलता है:-

आयु पितृदिनेशाभ्याम्।। प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम्।। प्रथमद्वितीययोरन्तयोर्वा मध्यम्।। मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम्।। एवं मन्दचन्द्राभ्याम्।। पितृकालतश्च।। संवादात् प्रामाण्यम्।।[4]

जैमिनि ज्योतिष में चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियों के सिध्दान्तों से आयु निर्णय किया जाता है। आयु तीन प्रकार की होती है:- दीर्घ आयु, मध्यम आयु और अल्प आयु। उपर्युक्त जैमिनि सूत्र से स्पष्ट है कि लग्नेश और अष्टमेश दोनो चर राशि में हों तो दीर्घ आयु समझना चाहिए। इसी प्रकार एक स्थिर तथा दूसरा द्विस्वभाव राशि में हों तो भी दीर्घ आयु समझना चाहिए। जैमिनि ने आयु विचार का मुख्य आधार लग्नेश और अष्टमेश को बनाया है। मध्यम आयु के लिए लग्नेश और अष्टमेश एक चर में तथा दूसरा स्थिर राशि में हों तो या लग्नेश और अष्टमेश दोनो द्विस्वभाव राशि में हों तो मध्यम आयु होती है अर्थात् दोनो स्थितियों में मध्यम आयु होगी। अगर एक चर राशि और दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो अल्प आयु समझना चाहिए। परन्तु हमारी शोध पत्रिका का उद्देश्य है कि ये नियम हमारे लिए कितना खरे उतरते हैं। जैसा कि आपको बताते चले कि हमारी शोध पत्रिका का यही उद्देश्य है कि समाज के लोगों को आयु से संम्बधित कई सिध्दान्तों में सरल सिध्दान्त प्रस्तुत कर विश्वास प्रकट कराना है। प्राचीन कथाओं में भी शनि को आयु अधिकारी ग्रह माना गया है जैसा सत्यवान और सावित्री की कथा से स्पष्ट है। हमारे शोध में यह दिखाया गया है कि हम कुछ व्यक्तियों पर जब इसका उपयोग किया तो पाया इन सिध्दान्तों में स्थूलता है अर्थात् सभी प्राणियों पर शत प्रतिशत सत्य साबित नहीं हुआ। परन्तु हमारे कहने का यह बिल्कुल उद्देश्य नहीं है कि ये सिध्दान्त सर्वथा निरर्थक हुए। हमने कुछ जगहों पर सही होते हुए भी पाया है।

अब यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि दीर्घ आयु के कितने वर्ष होंगे ? इस पर भी विद्वानों में अलग अलग

[3] बृह्पराशर होरा शास्त्रम् – श्री गणेशदत्त पाठक 26/2

[4] जैमिनि सूत्रम्- आयुर्दायाध्यायः

मत देखने को मिलते हैं। जैसे कुछ जगहों पर 120 वर्ष तो कहीं 96 वर्ष होते हैं। इसी प्रकार मध्यम आयु के लिए कहीं पर 80 वर्ष तो कहीं पर 64 वर्ष दिखाई देता है। अल्प आयु के लिए 32 वर्ष या 40 वर्ष का वर्णन देखने को मिलता है। आयु निर्धारण के लिए मुख्य घटक जैमिनि के अनुसार लग्नेश, अष्टमेश, शनि और चन्द्रमा इन्हीं का ज्यादा वर्णन देखने को मिलता है। उपरोक्त वर्णित सिध्दान्त में आगे चलकर जैमिनि ने एक परिर्वतन किया कि सप्तम में यदि चन्द्र हो तो अष्टमेश का उपयोग नहीं लेगे। केवल लग्नेश और शनि की बलवता के आधार पर ही आयु निर्धारण करेगें। आगे यह स्पष्ट किया गया है कि कभी कभी अलग अलग सिध्दान्तों में एक ही व्यक्ति की आयु अलग अलग आ जाती है तो यह कैसे सम्भव है। इस समस्या समाधान के लिए जैमिनि ने यह बताया कि यदि अलग अलग सिध्दान्तों के अनुसार किसी व्यक्ति की आयु अगर दो प्रकार से दीर्घ आयु और एक प्रकार से मध्यम आयु हों तो दो प्रकार वाली दीर्घ आयु को ही लेंगे। कहने का तात्पर्य है कि जिसकी ज्यादा अधिकता होगी उसी की आयु होगी।

एक उदाहरण से समझते हैं कि जैसे तुला लग्न की कुण्डली है जिसमें लग्नेश और अष्टमेश दोनो शुक्र है और शुक्र द्विस्वभाव राशि में बैठा है तो यह मध्यम आयु हुआ यह पहला प्रकार है। दूसरे प्रकार से चन्द्रमा चर राशि में है तथा शनि स्थिर राशि में है अतः दूसरे प्रकार से भी मध्यम आयु हुआ। तीसरा प्रकार से, लग्न चर राशि में है तथा होरा लग्न द्विस्वभाव राशि में है अतः अल्प आयु हुआ। हम देख रहे हैं कि यहाँ पर उस कुण्डली में मध्यम आयु हुआ। निष्कर्ष के रुप में कह सकते है कि किसी एक सिध्दान्त की सहायता से आयु के अन्तिम परिणाम तक नहीं पहुचा जा सकता है।

शनि के विषय में दूसरे विद्वानों का मत है कि यदि शनि योगकारक होगा तो विपरीत फल प्राप्त होता है। अर्थात् अल्प आयु हो तो मध्यम आयु, मध्यम आयु है तो दीर्घ आयु और दीर्घ आयु हो तो उससे अधिक आयु समझना चाहिए। शनि यदि अपनी राशि या उच्च राशि में हो तो कक्ष्याह्रास (आयु हानि) नहीं होगी। अगर ऐसा नहीं है तो आयु हीन होगी। यह सिध्दान्त ज्यादा उक्तपूर्ण दिखाई पड़ता है क्योंकि पराशर ज्योतिष में भी शनि की आयु द्वादश भाव में स्थान हानि के नियम से शून्य वर्ष आयु कर दिया जाता है। शनि की भांति गुरु को भी उपयुक्त स्थिति अनुसार प्राप्त होता है। इसी प्रकार गुरु शुभ ग्रह है परन्तु इसका फल शनि के विपरीत मिलती है। लग्न से सप्तम में गुरु हो या शुभ ग्रह से युति दृष्टि हो तो कक्षा वृद्धि होती है। अल्प आयु में मध्यम आयु, मध्यम आयु में दीर्घ आयु समझना चाहिए।

आगे चलकर अपने सूत्रों में जैमिनि ने भाव के अनुसार आयु निर्धारण किया है। ये नियम निम्न प्रकार से है-

1. लग्न से अष्टमेश और सप्तम से अष्टमेश इन दोनो में जो बली हो और वह केन्द्र स्थानों में स्थित हो तो दीर्घ आयु समझनी चाहिए।
2. अगर दोनो पणफर स्थानों (2, 5, 8, 11) में हो तो मध्यम आयु समझनी चाहिए।
3. अगर दोनो आपोक्लिम स्थान (3, 6, 9, 12) में हो तो हीन आयु समझनी चाहिए।
4. इसी प्रकार आत्मकारक ग्रह से अष्टमेश तथा सप्तम से अष्टम हो तो केन्द्रादि भाव में स्थित उपर्युक्त की भांति क्रमशः दीर्घ, मध्य और अल्प आयु होता है।

महर्षि पराशर के अनुसार, बालारिष्ट योग पर श्लोक निम्न प्रकार से है-

बालारिष्ट योगारिष्टमल्पध्यंच दिर्घकम।
दिव्यं चैवामितं चैवं सत्पाधायु प्रकीतितमः।। [5]

अर्थात् हे विप्र ! आयुर्दाय का वस्तुतः ज्ञान होना तो देवो के लिए भी दुर्लभ है। बालारिष्ट, योगारिष्ट, अल्प, मध्य, दीर्घ, दिव्य और अस्मित ये सात प्रकार की आयु है। बालारिष्ट की आयु 8 वर्ष की होती है। यदि चन्द्रमा 6,8,12वें भाव में हो तो बालारिष्ट की स्थिति होती है। यदि बालक का जन्म ग्रहण के समय हुआ हो तो भी बालारिष्ट योग बनता है। इसी प्रकार सातों आयु का योग सूत्र पराशर ज्योतिष में वर्णित होता है। जैमिनि के सिध्दान्तों में इन्हीं नियमों की मुख्यता दी गई है।

[5] बृहत्पराशर होराशास्त्र

उदाहरण- प. जवाहर लाल नेहरु का जन्म 14/11/1889 समय रात्रि 10 बजे जन्म हुआ। इनकी मृत्यु 27/05/1964 को 75 वर्ष की अवस्था में हुई। अब यहाँ देखना है कि इनकी पूर्ण आयु किन ग्रहों के कारण सम्भव हुई। राहु मारकेश था अतः राहु की महादशा में मरण हुआ। दूसरे विश्लेषण में, इनकी कर्क लग्न की कुण्डली थी और लग्नेश चन्द्रमा वहीं स्थित है तो यह आयु सूचक हुआ। तीसरा विश्लेषण, चन्द्रमा लग्न में है द्वितीय, द्वादश भाव में शनि राहु द्वारा पाप कर्तरी योग बना रहा है यह आयु हानि करेगा। परिणाम के रुप में यहाँ मध्यम आयु को प्राप्त हुआ। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर जैमिनि के अनुसार भी मध्यम आयु सिध्द होती है।

दूसरा उदाहरण- इन्दिरा गाँधी का जन्म 19/11/1917 समय रात्रि 23:11 पर हुआ। प्रथम विश्लेषण, जन्म नक्षत्र की लग्नेश या राशीश से शत्रुता हो तो व्यक्ति की मृत्यु का कारण हत्या होती है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य है जो राशीश शनि से शत्रुता करता है तथा लग्नेश चन्द्र जल तत्व यानि ठंडा ग्रह है। सूर्य का स्वभाव गर्म है दोनों के स्वभाव विपरीत है अतः इनकी मृत्यु हत्या से हुई। द्वितीय विश्लेषण, जैमिनी पध्दति से लग्नेश स्थिर राशि में तथा अष्टमेश भी स्थिर राशि में है तो मध्यम आयु हुआ। तीसरा विश्लेषण, शनि स्थिर राशि में है क्योंकि कुम्भ राशि में स्थित है। चन्द्रमा वृष राशि में है तो ये भी स्थिर राशि में हुआ। इस प्रकार भी मध्यम आयु हुई। चौथै विश्लेषण, लग्न चर राशि की है तथा होरा लग्न स्थिर राशि की है तो भी मध्यम आयु हुआ । इस प्रकार हमें ज्ञात हुआ कि इन्दिरा की हत्या द्वारा मृत्यु हुई और इनको मध्यम आयु प्राप्त हुआ।

जब आयु विचार किया जाय तो पराशर ज्योतिष के मारकेश सिध्दान्त व उनकी दशा को अनदेखा नहीं कर सकते हैं। जन्मांग चक्र में अष्टम भाव से आयु विचार किया जाता है। अष्टम स्थान से अष्टम स्थान अर्थात् लग्न से तृतीय स्थान भी आयु विचार स्थान होता है। प्रत्येक कुण्डली में लग्न से अष्टम स्थान और तृतीय स्थान आयु के होते हैं। इन स्थानों से व्यय स्थान अर्थात् अष्टम से द्वादश सप्तम स्थान और तृतीय स्थान का व्यय स्थान द्वितीय भाव होता है अतः मारक भाव द्वितीय और सप्तम भाव हुए। मंगल मारकेश होने पर पाप फल नहीं देते हैं। सप्तम स्थान मारक भाव व केन्द्र भाव दोनों है। गुरु और शुक्र सप्तम के स्वामी हों तो प्रबल मारक होते हैं। इससे कम बुध व चन्द्रमा सबसे कम मारक होता है। शनि के मारक से सम्बध मात्र होने से ही मारक में प्रबलता आ जाती है। मारक स्थानों में द्वितीयेश के साथ वाला पाप ग्रह सप्तमेश के साथ वाले पाप ग्रह से अधिक मारक होता है। द्वितीय भाव में स्थित पाप ग्रह सप्तम भाव में स्थित पाप ग्रह से अधिक मारक होता है किन्तु सप्तमेश के साथ रहने वाले पाप ग्रह से कम इसी प्रकार द्वितीयेश सप्तमेश से अधिक किन्तु सप्तमस्थ पाप ग्रह से कम होता है। मारकेश के द्वितीय भाव, सप्तम भाव की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। और इसके स्वामी के अपेक्षा उसके साथ रहने वाला पाप ग्रह अधिक प्रभावशाली है। स्वामी तो महत्वपूर्ण है ही किन्तु उसके साथी पापी ग्रहों का भी निर्णय विचार पूर्वक करना चाहिए। ग्रहों का भी निर्णय विचार उपर्युक्त भाँति करना चाहिए। सामान्यतः यह समझा जाता है कि मारकेश जातक की मृत्यु के कारण होते हैं। किन्तु मारकेश द्वारा सूचित मृत्यु यदि जातक की आयु हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट के परिचायक होते हैं। चाहे शारीरिक या भयानक अपमान आदि के द्वारा मानसिक ही क्यों न हों। इसलिए विचार के साथ – साथ जातक की आयु के सम्बन्ध में भी विचार कर लेना चाहिए। जैमिनि मतानुसार चक्र का प्रयोग किया जा सकता है। यदि आयु विचार में आयु पूर्ण है तो मारकेश मारक नहीं होगा साथ ही जातक से सम्बन्ध पुत्र पुत्री पिता आदि जन्मागों से भी जातक के सम्बन्धानुसार कर लेना चाहिए। इतना ही नहीं मारकेश ग्रह के बलाबल का भी विचार कर लेना चाहिए। मारकेश दोष शमन करने वाले ग्रह भी होते है राहु के दोष को बुध, राहु- बुध के दोष को शनि, राहु बुध शनि तीनों का मंगल, राहु बुध शनि मंगल चारों का शुक्र, इन पांचों को गुरु, गुरु समेत छः ग्रहो के दोष को चन्द्रमा और सभी के दोषो को उत्तरायण का सूर्य दूर करने में सक्षम होता है। इस सन्दर्भ में ग्रहों की विफलता भी विचारणीय है।

एक उदाहरण से समझते है तुला लग्न की कुण्डली है जिसके द्वादश भाव में कन्या राशि में सूर्य 5°, बुध 12°, शुक्र 12°, चन्द्र 13° है। 11 वें भाव में राहु 13°, गुरु 5°, शनि 3° है। मंगल 4° पर दसवें भाव में है। लग्न स्पष्ट 06/28°/5′/58" है तथा होरा लग्न स्पष्ट 08/27°/48′/56" है। चार ग्रह द्वादश भाव में स्थित है जिसमें लग्नेश शुक्र भी स्थित है जो कि शुक्र नीच अवस्था में स्थित है। दसवें भाव में मंगल नीच अवस्था में स्थित है। प्रथम विश्लेषण पराशरी व जैमिनि पध्दति से,

- लग्नेश व अष्टमेश दोनों शुक्र ग्रह है और दोनों द्विस्वभाव राशि में स्थित हैं। अतः मध्यम आयु योग बनाते हैं।
- शनि स्थिर राशि में है, चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में है यह दीर्घ आयु योग बनाते हैं।
- लग्न चर राशि में तथा होरा लग्न द्विस्वभाव राशि में है अतः अल्प आयु योग बनाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस जन्म कुण्डली में तीन प्रकार से आयु आयी। परन्तु होरा लग्न व लग्न वाली आयु को ग्रहण करेंगे। अतः इनकी आयु 40 वर्ष से कम होगी। यदि आत्मकारक ग्रह केन्द्र स्थान में हो तो अल्प आयु में कमी आती है अर्थात् आयु वृध्दि हो जाती है परन्तु कुण्डली में आत्मकारक ग्रह शनि है जो कि एकादश भाव में स्थित है। अतः इनकी आयु वृध्दि नहीं होगी और 40 वर्ष के आस-पास मृत्यु हो सकती है।

K.P पध्दति से, जन्म कुण्डली में लग्न पति शुक्र है और इसका उपनक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। वह द्वादश भाव में बैठा है वहाँ का कार्येश भी बनता है। लग्न व अष्टम का भी कार्येश बनता है। द्वादश भाव में बैठा है वहाँ का कार्येश बनता है। उपनक्षत्र पति शनि बाधक भाव में स्थित है। अष्टम बाधक द्वादश भाव का कार्येश बनता है। 12वें भाव में सूर्य के साथ अस्त होकर शुक्र बाधकेश के साथ द्वादश में बैठा है। अतः अल्प आयु योग बनता है। शनि राहु के साथ स्थित है और बाधक भाव में स्थित है और शुक्र के नक्षत्र में है शुक्र अष्टमेश होकर द्वादश में स्थित है। अतः शनि से भी अल्प आयु कारक सिध्द हुआ।

सन्दर्भ

1. जैमिनि सूत्रम् – पं. सीताराम शर्मा
2. बृहत्तपराशर होराशास्त्र – श्री गणेशदत्त पाठक
3. बृहज्जातकम् – केदारदत्त जोशी
4. सामुद्रिकशास्त्र – डॉ. श्रीनारायण सिंहेण
5. जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन – डा. बी वी रमन
6. जैमिनि सूत्रम् – डा. सुरेश चन्द्र मिश्र
7. जैमिनि ज्योतिष – कृष्ण कुमार